थनैला रोग (मैस्टाइटिस) की रोकथाम

थनैला एक विश्वव्यापी बीमारी है जो दुग्ध उत्पादन को सबसे ज्यादा हानि पहुँचाती है। इस बीमारी में संक्रमण थन में होता है जिसकी जानकारी, दूध के भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन द्वारा होती है जैसे दूध का रंग बदलना, छेछड़े आना, खून आना तथा थनों में सूजन आदि का होना। प्रभावित पशु का दूध पीने से मनुष्यों को भी कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती है।

कारण

यह बीमारी बैक्टीरिया (जीवाणु) द्वारा होती है जो थनों के रास्ते से प्रवेश करते हैं तथा वहाँ पर इनकी संख्या धीरे–धीरे बढ़ती जाती है। बैक्टीरिया गंदे वातावरण, पशु के थन व अयन की त्वचा पर मौजूद रहते हैं। कभी–कभी यह रोग, दूध निकालने वाले के हाथों में जीवाणु की उपस्थिति द्वारा भी फैलता है। प्रायः दूध में तथा थनों के अन्दर कोई जीवाणु नहीं पाया जाता है। लेकिन कुछ कारणों से बैक्टीरिया थन में प्रवेश करते है और यह रोग उत्पन्न करते हैं। कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हो सकते हैं।

- थन या नाक में चोट लगने, कटने या फटने पर इस बैक्टीरिया के प्रवेश में सुविधा होती है और रोग तेजी से फैलता है।
- अधिक दूध देने वाले तथा क्रास ब्रेड (जर्सी, फ्रीजीयन) पशुओं को यह बीमारी अधिक होती है।
- अधिक उम्र वाले पशु को इस बीमारी की सम्भावना अधिक होती है।
- बीमारी का प्रकोप ब्यात के शुरू में अथवा अंत में अधिक पायी जाती है।
- पशु तथा इसके आवास में सफाई की कमी से भी यह रोग फैलता हैं।

लक्षण

- पशु को तेज बुखार हो जाता है और जुगाली करना बंद कर देता है। थन व अयन के एक या अधिक भागों में सूजन आ जाती है तथा वह छूने पर गर्म, लाल व सख्त पाया जाता है।
- थनों से गाढ़ा, हल्का पीला, खून मिला हुआ द्रव निकलता है जो थन से खींचने पर कठिनाई से बाहर निकलता है। कभी–कभी यह फोड़े का रूप भी ले लेता है जो बाहर की तरफ फूटता है।
- दूध में छोटे–छोटे थक्के आने लगते हैं। बाद में दूध पतला पड़ जाता है और थक्के भी ज्यादा आने लगते हैं।
- दूध का रंग पीला तथा कभी–कभी खून मिला होता है। दूध की मात्रा घट जाती है तथा कभी–कभी दूध निकलना बिल्कुल बन्द हो जाता है।

रोग से बचाव

- दूध निकालने वाले व्यक्ति का हाथ अच्छी प्रकार साफ होना चाहिए। दूध पूरे हाथ से तथा पूर्ण मात्रा में निकालना चाहिए।
- दूध निकालते समय थनों को झाग तथा हाथ को तेल इत्यादि से चिकनाई नहीं करना चाहिए।
- रोगी पशु का दूध अंत में निकालें तथा सफाई पर पूर्ण ध्यान दें।
- दूध निकालने के पश्चात दुग्ध नलिकाओं को बंद होने में लगभग 15 मिनट का समय लगता है। इस बीच पशु प्रायः थक जाते हैं। और तुरन्त बैठ जाते हैं। अतः किसान भाई ध्यान रखें और पशु को दुहने के पश्चात 15 मिनट तक जमीन पर बैठने न दें तो संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है।
- आहार के साथ विटामिन 'ई' दिये जाने से थनैला रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है। इस उद्देश्य के लिए गर्भावस्था के अंतिम 60 दिन तथा ब्याने के 30 दिन पश्चात् विटामिन 'ई' 1000 आई.यू. एवं सेलेनियम युक्त खनिज मिश्रण 50 ग्रा. प्रति पशु प्रतिदिन दिये जाने का सुझाव है।

उपचार

पशु–चिकित्सक से संपर्क करें एवं एंटीबॉयोटिक जो थन में दी जा सकती है, जैसे – एमोक्सिसीलीन, क्लोक्सासीलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, पैनिसिलिन एवं सेफ्ट्राईक्जोन समूह की दवा 4–5 दिन चढ़ाना चाहिए।